NEERAJ®

M.S.W.-3

आधारभूत सामाजिक विज्ञान की संकल्पनाएं

(Basic Social Science Concepts)

Chapter Wise Reference Book
Including Many Solved Sample Papers

Based on

I.G.N.O.U.

& Various Central, State & Other Open Universities

By: *Manish Kumar*

NEERAJ PUBLICATIONS
(Publishers of Educational Books)

Retail Sales Office:

1507, First Floor, Nai Sarak, Delhi - 6 | Mob.: 8510009872, 8510009878
E-mail : info@neerajbooks.com Website : www.neerajbooks.com

MRP ₹ 320/-

Content

आधारभूत सामाजिक विज्ञान की संकल्पनाएं
(Basic Social Science Concepts)

Question Paper—June-2023 (Solved) 1-3
Question Paper—December-2022 (Solved) 1-2
Question Paper—Exam Held in March-2022 (Solved) 1-2
Question Paper—Exam Held in February-2021 (Solved) 1-2
Question Paper—June, 2019 (Solved) 1-3
Question Paper—June, 2018 (Solved) 1-2
Question Paper—December, 2017 (Solved) 1-2
Question Paper—June, 2017 (Solved) 1-2

S.No.	Chapterwise Reference Book	Page

1. समाज कार्य और अन्य विषयों के साथ इसका सम्बन्ध 1
(Social Work and its Relationship to other Disciplines)

2. समाज और संस्कृति 11
(Society and Culture)

3. भारतीय समाज : संरचना, वर्गीकरण और स्तरीकरण 24
(Indian Society: Composition, Classification and Stratification)

4. सामाजिक समूह, सामाजिक संस्थाएँ और सामाजिक नियंत्रण 35
(Social Groups, Social Institutions and Social Control)

5. सामाजिक बदलाव : अर्थ, विशेषताएँ और कारक 45
(Social Change: Meaning, Characteristics and Factors)

6. समाज कार्य अभ्यास के लिए मनोवैज्ञानिक आधार 56
(Psychological Foundation for Social Work Practice)

7. समाज कार्य अभ्यास के लिए सामाजिक मनोविज्ञान की अवधारणाएँ 67
(Concepts of Social Psychology for Social Work Practice)

8. सामाजिक अधिगम और अभिप्रेरण 77
(Social Learning and Motivation)

9. रक्षा युक्तियाँ और तनाव 87
(Defense Mechanisms and Stress)

10. मानव वृद्धि एवं विकास की अवस्थाएँ 96
(Stages of Human Growth and Development)

11. मानव वृद्धि एवं विकास के जैविक पहलू 105
(Biological Aspects of Human Growth and Development)

12. परिवार एवं विवाह की अवधारणा 114
(Concept of Family and Marriage)

13. पुरुष और महिला के सम्बन्ध में जानकारी 122
(Understanding Man and Woman)

14. पारिवारिक जीवन चक्र 130
(Family Life Cycle)

15. परिवर्तनशील समाज में परिवार तथा विवाह 138
(Family and Marriage in the Changing Society)

16. परिवारों के साथ सामाजिक कार्य 146
(Social Work with Families)

17. पारिवारिक व्यवस्था में समकालीन समस्याएँ 155
(Contemporary Problems in Family System)

18. किशोरों और युवाओं का लालन-पालन 167
(Parenting Adolescents and Youngsters)

■■

Sample Preview of the Solved Sample Question Papers

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

QUESTION PAPER

June – 2023

(Solved)

आधारभूत सामाजिक विज्ञान की संकल्पनाएँ

M.S.W.-3

(Basic Social Science Concepts)

समय : 3 घण्टे] *[अधिकतम अंक : 100*

नोट : *सभी पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।*

प्रश्न 1. सामाजिक संस्थाओं की अवधारणा, प्रकार और कार्यों की चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-4, पृष्ठ-43, प्रश्न 8, प्रश्न 9

अथवा

मानव वृद्धि और विकास की आठ अवस्थाओं को समय-सीमा देते हुए स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-10, पृष्ठ-96, 'मानव वृद्धि एवं विकास की अवस्थाएं'

प्रश्न 2. उदाहरणों का हवाला देते हुए भावनात्मक रूढ़िबद्धता के प्रभाव का वर्णन कीजिए।

उत्तर–रूढ़िबद्धता का अर्थ है धारणा बनाना। अत: भावनात्मक रूढ़िबद्धता से तात्पर्य भावनात्मक रूप से धारणाओं से बचना है। भावनात्मक धारणा सकारात्मक, नकारात्मक व उदासीन हो सकती है। रूढ़ियां अर्थात् धारणाएं अनेक समाज में प्रचलित है, जो समूहों के मध्य अन्तरों को बढ़ाने का कार्य करती हैं। प्राय: ये धारणाएं वस्तुनिष्ठ सत्य पर आधारित नहीं होतीं। हर मान्यता के पीछे व्यक्तिगत अनुभव और भ्रम होते हैं एवं जब वह व्यक्ति उन्हें प्रसारित करता है, तो लोग भावनात्मक रूप से उन भ्रमों से जुड़ते चले जाते हैं और इस तरह से मान्यताएँ सामूहिक हो जाती हैं। इसी प्रकार यदि किसी समुदाय विशेष से संबंधित व्यक्ति के साथ आपका कोई कटु अनुभव रहा है तो आपका उस समुदाय विशेष से संबंधित सभी व्यक्तियों को गलत समझना नकारात्मक रूढ़िबद्धता से संबंधित है। जिस प्रकार जाति के आधार पर आजकल अराजकता फैल रही है अर्थात् एक धर्म के लोग दूसरे व्यक्ति को केवल उसके धर्म के कारण सम्मान नहीं देते। जैसे आतंकवाद को एक मुख्य धर्म से ही जोड़ना और अधिक संख्या में लोगों का इस मत के समर्थन में होना भावनात्मक रूढ़िबद्धता का ही परिणाम है।

मान्यतावाद में प्रयुक्त धारणाएं नकारात्मक तथा सकारात्मक दोनों तरह हो सकती हैं। मान्यताओं को लेकर लोगों के मन में यह भ्रम है कि मान्यताएं सामूहिक ही होती हैं, किंतु ऐसा नहीं है। यह किसी व्यक्ति के दिमाग से कोई चीज निकलती है और वह भूत की बिमारी की तरह फैल जाती है। हर मान्यता के पीछे व्यक्तिगत भ्रम और अनुभव होते हैं, जब वह व्यक्ति उन्हें प्रचारित करता है तो कुछ और लोग अनुभव और भ्रम में उनसे जुड़ते चले जाते हैं। इस प्रकार की रूढ़िवादता को भावनात्मक रूढ़िबद्धता कहा जाता है। इसे एक उदाहरण की सहायता से स्पष्ट करते है। यदि किसी व्यक्ति का कोई काम नहीं हो रहा है। वह दो महीने से काफी परेशान है और उसे कोई मदद करने वाला भी नहीं दिख रहा है, जिस रास्ते से वह गुजरता है, वहां एक कीकर का पेड़ है। एक दिन उसके मन में विचार आता है और वे वहां रुककर उस पर एक सिक्का चढ़ा देता है तथा मदद के लिए कहता है। कुछ दिन बाद उसका यह काम बन जाता है। वह यह किस्सा अपने मित्रों व रिश्तेदारों को बताता है। कुछ समय पश्चात् उस पेड़ के पास एक धर्मस्थल बन जाता है। इस तरह से व्यक्ति की मान्यता सामूहिक मान्यता बन जाती है।

पुरुषों की तुलना में भावनात्मक प्रतिक्रिया और विनियमन प्रणालियों की हमारी समझ पर सवाल उठता है। इसके अलावा, यह धारणा हमारे एक-दूसरे के साथ और बड़े पैमाने पर हमारे समाज के साथ बातचीत करने के तरीके पर गहरा प्रभाव डाल सकती है।

इन कारणों से, आधुनिक मनोविज्ञान अनुसंधान का एक उभरता हुआ प्रभाग इन रूढ़ियों की आलोचनात्मक जाँच के लिए समर्पित है। कई शोधकर्ताओं ने निष्कर्ष निकाला है कि पुरुषों और महिलाओं के बीच देखे गए भावनात्मक अंतर मुख्य रूप से जीवविज्ञान के बजाय सामाजिक लिंग भूमिकाओं से उत्पन्न होते हैं। इस प्रकार, कुछ आबादी द्वारा अनुभव की जाने वाली भावनात्मक अभिव्यक्ति की सीमा, बड़े पैमाने पर स्त्रीत्व और पुरुषत्व के लिए उनकी संस्कृति की अपेक्षाओं पर आधारित होती है। शोध से पता चला है कि संस्कृति और संदर्भ-विशिष्ट लिंग भूमिकाओं का भावनात्मक अभिव्यक्ति पर जैविक कारकों की तुलना में अधिक प्रभाव पड़ता है। ''अनुभवजन्य साक्ष्य से पता चलता है कि लड़कियों को भावनात्मक, गैर-आक्रामक, पालन-पोषण करने वाला और आज्ञाकारी होने के लिए समाजीकृत किया जाता है, जबकि लड़कों को भावनात्मक, आक्रामक, उपलब्धि-उन्मुख और आत्मनिर्भर होने के लिए समाजीकृत किया जाता है। जैसे-जैसे बच्चे विकसित होते हैं और प्रभाव में परिपक्व होते हैं, सहकर्मी इस प्रक्रिया को जारी रखते हैं। कुछ भावनाओं को कैसे, कहाँ, क्यों और किसके

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

साथ व्यक्त किया जाता है, इस पर प्रतिबंध लगाना। भावनात्मक रूढ़िवादिता का एक प्रभाव यह है कि लोग एकांत में अधिक तीव्र नकारात्मक चेहरे के भाव प्रदर्शित करते हैं और जब अन्य लोग मौजूद होते हैं तो अधिक मुस्कुराते हैं। इस प्रकार, सामाजिक स्थिति के विपरीत महिलाएं एकान्त स्थिति में अपना गुस्सा व्यक्त करने की अधिक संभावना रखती थीं। दूसरी ओर, पुरुष दूसरों के सामने सकारात्मक दिखने को लेकर कम चिंतित दिखते हैं; अन्य लोग उपस्थित थे या नहीं, इसके आधार पर उनके क्रोध की अभिव्यक्ति में कोई अंतर नहीं दिखा।

अथवा

परिवार की संस्था पर सामाजिक परिवर्तन के प्रभाव पर प्रकाश डालिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-15, पृष्ठ-138, 'परिवार संस्थान पर सामाजिक परिवर्तन का प्रभाव', पृष्ठ-144, प्रश्न 7

प्रश्न 3. निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) सामाजिक परिवर्तन में सामाजिक कार्यकर्ता की भूमिका की विवेचना कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-14, पृष्ठ-130, 'कार्य एवं उत्तरदायित्व'

(ख) व्यक्तित्व के विकास में योगदान देने वाले कारकों की व्याख्या कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-6, पृष्ठ-62, प्रश्न 4

(ग) विवाह की संस्था, इसके महत्त्व और कार्यों का वर्णन कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-12, पृष्ठ-118, प्रश्न 2

(घ) परिवार के जीवन चक्र के स्वतन्त्रता चरण में एक व्यक्ति के मुख्य कार्यों और कौशल को चित्रित कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-14, पृष्ठ-134, प्रश्न 2

प्रश्न 4. निम्नलिखित में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) ग्रामीण समुदाय और शहरी समुदाय के बीच अन्तर कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-2, पृष्ठ-21, प्रश्न 8

(ख) समूहों की तैयार की गई विशेषताओं की सूची बनाइए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-2, पृष्ठ-19, प्रश्न 4

(ग) हम तनावग्रस्त क्यों हो जाते हैं?

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-9, पृष्ठ-93, प्रश्न 7

(घ) वर्तमान सन्दर्भ में विभिन्न मानक और वैकल्पिक परिवार पैटर्न की व्याख्या कीजिए जो आपके सामने विद्यमान हैं।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-12, पृष्ठ-117, प्रश्न 1

(ङ) सामान्य प्रणाली सिद्धान्त की मुख्य विशेषताएँ क्या है?

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-16, पृष्ठ-152, प्रश्न 5

(च) बच्चों पर वैवाहिक कलह के प्रभाव का उल्लेख कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-17, पृष्ठ-156, 'तलाक / विलगन का प्रभाव'

यह भी देखें–कार्बनिक और मनोवैज्ञानिक जोखिम की विभिन्न डिग्री पर पैदा हुए बच्चों के न्यूरोसाइचिकटिक विकास पर संभावित अध्ययन के हिस्से के रूप में, 315 प्रथम जन्मे बच्चों के संज्ञानात्मक और सामाजिक-भावनात्मक विकास पर वैवाहिक विवाद के प्रभाव का आकलन दो घरों में किया गया था। बच्चों और माता-पिता के रिश्तों की गुणवत्ता का मूल्यांकन तब किया गया जब बच्चे 3 महीने और 2 साल की उम्र के थे। निष्कर्ष बताते हैं कि 3 महीने में वैवाहिक विवाद बच्चे के प्रदर्शन को 3 महीने या 24 महीने में प्रभावित नहीं करता है। 2 साल के वैवाहिक विवाद 2 साल की उम्र के भावनात्मक कल्याण को प्रभावित करता है, यानी मनोविज्ञान संबंधी लक्षणों में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। जब दूसरे मूल्यांकन से वैवाहिक संघर्ष की स्थिरता का प्रभाव अध्ययन किया गया, तो व्यवहार की समस्याओं में उल्लेखनीय वृद्धि और संज्ञानात्मक प्रदर्शन में कमी देखी गई। यह स्थिति उन बच्चों के समूह में मिली थी जिनके माता-पिता की वैवाहिक स्थिति बिगड़ गई थी और इस दौरान विफल रही थी।

इसके विपरीत, अभिभावक संबंधों में सकारात्मक परिवर्तन के साथ खराब बाल प्रदर्शन और भावनात्मक समायोजन में सुधार हुआ। विश्लेषण से पता चलता है कि नकारात्मक वैवाहिक परिवर्तन बढ़ रहा है, जिससे माता-पिता के कौशल में कमी आती है, जो बच्चों को उनके समकक्षों की तुलना में अधिक प्रतिकूल रूप से प्रभावित करती है जिनके माता-पिता के पास विवाह और बाल पालन की समस्याएं थीं।

प्रश्न 5. निम्नलिखित में से किन्हीं पाँच पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

(क) मनश्चिकित्सा और सामाजिक कार्य

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-1, पृष्ठ-8, प्रश्न 6

(ख) भूमिका संघर्ष

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-2, पृष्ठ-19, प्रश्न 3

(ग) सामाजिक स्तरीकरण

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-3, पृष्ठ-32, प्रश्न 7

(घ) फ्रायड के इदम्, अहम् और पराहम्

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-6, पृष्ठ-64, प्रश्न 6

(ङ) स्टीरियोटाइप (रूढ़िबद्धता)

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-7, पृष्ठ-71, 'पूर्वाग्रह भेदभाव और रुढ़िबद्धता का परिचय'

इसे भी देखें–रूढ़ियाँ अनेक समाजों में प्रचलित हैं। रूढ़ियों की कुछ प्रमुख विशेषताएँ इस प्रकार हैं–ये नई जानकारी प्राप्त करना संभव बनाती हैं, व्यक्ति के अनुभवों को संगठित करती हैं, यह अन्तर का मूल्यांकन करने में सहायता करती हैं तथा यह

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

Sample Preview of The Chapter

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

आधारभूत सामाजिक विज्ञान की संकल्पनाएं
(Basic Social Science Concepts)

समाज कार्य और अन्य विषयों के साथ इसका सम्बन्ध
(Social Work and its Relationship to other Disciplines)

1

परिचय

समाज कार्य का अन्य विषयों के साथ भी महत्त्वपूर्ण सम्बन्ध है। समाज कार्य को सहायता करने वाला, समस्या का समाधान करने वाला तथा समर्थ बनाने वाला व्यवसाय कहा गया है। समाज कार्यों की उपयोगिता के लिए यह आवश्यक है कि ये कुछ मानदण्डों पर खरे उतर सकें। समाज कार्यों का अपना ज्ञान-आधार होना चाहिए। आमतौर पर अधिकांश सामाजिक कार्यकर्त्ता व्यावहारिक कार्यों में लगे रहते हैं उनके पास सैद्धांतिक दृष्टिकोण विकसित करने का समय नहीं होता। अपने विकास के प्रारंभ में समाज कार्य मनोविज्ञान, समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र तथा राजनीति शास्त्र से लिए गए ज्ञान पर आश्रित था। परन्तु 1970 के दशक से समाज कार्य का विस्तार होना शुरू हो गया तथा समाज कार्य अधिकाधिक महत्त्व प्राप्त करता चला गया। वर्तमान में समाज कार्य एक स्वतंत्र विषय के रूप में विकसित हो गया है, परन्तु यह भी उतना ही सत्य है कि समाज कार्यों पर अन्य विषयों का प्रभाव वर्तमान में भी पड़ रहा है, जो उसके महत्त्व को ओर भी बढ़ा रहा है। प्रस्तुत अध्याय समाज कार्य और अन्य विषयों के साथ इसके सम्बन्धों पर प्रकाश डालता है। एक शैक्षिक विषय के रूप में समाज कार्य का क्रमिक विकास, समाज कार्य और अन्य विषयों के साथ इसका सम्बन्ध, समाजशास्त्र और समाज कार्य, मनोविज्ञान और समाज कार्य, चिकित्सा क्षेत्र और समाज कार्य, मनोचिकित्सा और समाज कार्य, इतिहास और समाज कार्य, लोक प्रशासन और समाज कार्य, तथा समाज कार्य और कानून जैसे पहलुओं का विश्लेषण इस अध्याय में किया गया है। इसके अतिरिक्त दर्शन शास्त्र, नीति शास्त्र और समाज कार्य तथा अर्थशास्त्र और समाज कार्य पर भी प्रकाश डाला गया है।

अध्याय का विहंगावलोकन

एक शैक्षिक विषय के रूप में समाज कार्य का क्रमिक विकास

आधुनिक समाज कार्य का विकास औद्योगिक समाज से उत्पन्न समस्याओं के समाधान के लिए हुआ था। आधुनिक समाज मे समाज कार्य एक व्यवसाय बन गया है, जिसके परिणामस्वरूप व्यावसायिक समाज कार्य का उद्‌भव हुआ। व्यवसाय का व्यवसायीकरण सामाजिक बदलाव का परिणाम था। पाश्चात्य जगत में समाज कार्य के उद्‌भव को सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक कारकों ने भी प्रभावित किया। औद्योगिक समाज ने कई समस्याओं को उत्पन्न किया। जिसमें ग्रामीण क्षेत्रों से लोगों का शहरी क्षेत्रों की और पलायन प्रमुख थी। सामाजिक नियंत्रण में भी कमी आई। शहरी लोग भौतिक समस्याओं से भी ग्रस्त थे। परिवार एवं चर्च जैसी संस्थाएँ अब सामाजिक समस्याओं से निपट नहीं पा रही थी। आधुनिक समाज कार्य की नींव तब पड़ी जब स्वयंसेवी संस्थाओं ने निर्धनों की समस्याओं को दूर करने के लिए कार्य करना आंरभ किया, परन्तु इस बात को महसूस किया गया कि दान को संगठित करने का प्रयास करना चाहिए। चैरिटी ऑर्गेनाइजेशन सोसाइटी और सेटलमेंट हाउस द्वारा इस दिशा में प्रयास किये गये। चैरिटी ऑर्गेनाइजेशन सोसायटी की स्थापना इंग्लैण्ड में 1869 में तथा अमेरिका में 1877 में हुई। इस सोसायटी ने जरूरतमंद सेवार्थियों की पहचान की तथा सहायता देने की प्रणाली को व्यवस्थित

Neeraj Publications www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

किया। यह सोसायटी न केवल वित्तीय सहायता देती थी बल्कि सामाजिक तथा मनोवैज्ञानिक सहायता भी प्रदान करती थी। इस सोसायटी को 'केस वर्क' पद्धति का प्रवर्तक भी कहा जाता है। कल्याणकारी सेवाओं के प्रशासन के लिए एजेंसियों का भी गठन किया गया। 1889 में अमेरिका में सेंटलमेंट हाउस खोले गए। ये ऐसी एजेंसियाँ थीं, जिनमें विश्वविद्यालयों के विद्यार्थी गरीबों की सहायता करते थे। इनके द्वारा प्रयुक्त पद्धतियों को तीन ''आर'' (रेजीडेंस-आवास, रिफॉर्म-सुधार और रिसर्च-शोध) कहा जा सकता है। चैरिटी ऑर्गेनाइजेशन सोसायटी का प्रमुख उद्देश्य था गरीबों की सहायता करना, जबकि सैंटलमेंट हाउस का लक्ष्य था निर्धनों को समझना तथा निर्धनता के लिए उत्तरदायी स्थितियों को सुधारना।

सामाजिक आन्दोलनों ने भी आधुनिक समाज कार्य को प्रभावित किया। इन आन्दोलनों में श्रम आन्दोलन, समाजवादी आन्दोलन, महिला आन्दोलन प्रमुख थे। विकलागों, बच्चों तथा बेघरों के अधिकारों को मान्यता भी मिल रही थी। अनेक समाज कार्यकर्त्ता इन आन्दोलनों से प्रभावित हुए। उदाहरण के लिए जेन एडम्स जिन्होंने शिकागो में सैटलमेंट हाउस शुरू किया था, उन्हें शान्ति आन्दोलन में योगदान देने के लिए नोबेल पुरस्कार दिया गया। व्यावसायिक समाज कार्य को उभारने में राज्यों की भूमिका भी महत्त्वपूर्ण थी। 1935 के सामाजिक सुरक्षा अधिनियम में निर्धनों को सहायता प्रदान करने की जिम्मेदारी सरकार को सौंपी गई। सामाजिक कार्यकर्त्ताओं ने कल्याण कार्यक्रमों की योजना बनाकर उन्हें लागू किया, जिससे समाज कार्य की वैधता बढ़ गई। समाज में समाज कार्यकर्त्ताओं की बढ़ती भूमिका से यह महसूस किया गया कि उन्हें प्रशिक्षित करने के लिए एक शिक्षा प्रणाली बनायी जाये। इस दिशा में प्रथम प्रयास कोलंबिया विश्वविद्यालय ने किया। उसने 1896 में स्वयंसेवियों के लिए एक छः सप्ताह का प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू किया। धीरे-धीरे पाठ्यक्रमों की संख्या भी बढ़ गई। न्यूकमर ने ऐसे तीन कारण बताये हैं जिनके कारण अमेरिका में समाज कार्य शिक्षा में उन्नत्ति हुई–

(i) सामाजिक विज्ञानों का विकास,

(ii) नेशनल कांफ्रेंस ऑफ चैरिटीज एवं करेक्शंस की स्थापना तथा

(iii) निजी महिला कॉलेज तथा सार्वजनिक विश्वविद्यालयों की स्थापना।

20वीं शताब्दी तक अमेरिका में समाज कार्य पाठ्यक्रम सभी विश्वविद्यालयों में पढ़ाये जाने लगे। 1932 में एसोसिएशन ऑफ स्कूल्स ऑफ सोशल वर्क ने एक पाठ्यचर्या अपनाई जिसमें सामाजिक कार्य से सम्बन्धित पाठ्यक्रम शामिल थे। 1944 में इस संस्था ने समाज कार्य पाठ्यक्रमों में पढ़ाए जाने के लिए आठ क्षेत्रों की पहचान की थी। समाज कार्य की शिक्षा को नियंत्रित करने के लिए 1952 में 'द काउंसिल ऑफ सोशल वर्क एजुकेशन' की स्थापना की गई। 1962 में इसने पहली पाठ्यचर्या नीति अपनाई, जिसमें पाठ्यक्रमों को तीन क्षेत्रों में विभाजित किया गया:- जैसे-समाज कल्याण नीति, मानव व्यवहार तथा कार्य व्यवहार की पद्धतियाँ। 1982 की समीक्षा में पाँच क्षेत्रों की पहचान की गयी-सामाजिक परिवेश, समाज कल्याण नीति, समाज कार्य व्यवहार, अनुसंधान तथा फील्ड प्रैक्टिकम। 1992 में कुछ नए क्षेत्रों जैसे-लोकाचार, जातीय विविधता, मानव व्यवहार, समाज कार्य व्यवहार तथा अनुसन्धान पर ध्यान केन्द्रित किया गया। इस समय अमेरिका में समाज कार्य के विषयों के सन्दर्भ में आम सहमति है। इंटरनेशनल एसोसिएशन ऑफ स्कूल्स ऑफ सोशल वर्क ने 1998-99 में समाज कार्य पाठ्यक्रमों की एक वैश्विक तस्वीर प्रस्तुत की। अमेरिका के बाहर के लगभग 54% स्कूलों ने लोक प्रशासन, सामाजिक इतिहास तथा दर्शन, जातीय फोकस तथा सामाजिक सिद्धान्त के विषय निर्धारित किए। जबकि 68% स्कूलों ने अनुसन्धान, सामाजिक नीति, व्यक्तिगत हस्तक्षेप तथा सामुदायिक हस्तक्षेप के पाठ्यक्रम रखे। मौजूदा पाठ्यचर्चा को चार भागों में विभाजित किया जा सकता है–

(1) मानव व्यवहार जिसमें सामाजिक यथार्थ की व्याख्या करने वाले सिद्धान्त शामिल हैं। यह भाग समाजशास्त्र, मनोविज्ञान, इतिहास तथा अर्थशास्त्र जैसे विषयों पर आधारित है।

(2) सामाजिक नीति तथा सामाजिक कल्याण प्रशासन। यह भाग नीति विज्ञानों, तथा लोक प्रशासन जैसे विषयों पर आधारित है।

(3) समाज कार्य व्यवहार–यह भाग सामाजिक कार्य की पद्धतियों पर आधारित है।

(4) सामाजिक कार्य अनुसन्धान, जो साधनों की प्रभावशीलता के मूल्यांकन और आकलन पर केन्द्रित है।

एक विषय के रूप में समाज कार्य से सम्बन्धित पुस्तकों की संख्या बढ़ी है। मैरी रिचमण्ड ने सामाजिक निदान नामक पुस्तक लिखी। इस पुस्तक ने सामाजिक कार्य के व्यवहार को भी प्रभावित किया, क्योंकि यह कृति व्यवहार की पद्धतियों का वर्णन करती है।

समाज कार्य और अन्य विषयों के साथ इसका सम्बन्ध

समाज कार्य का सम्बन्ध अनेक विषयों से है। समाजशास्त्र, मनोविज्ञान और सामाजिक नीति जैसे विषयों ने समाज कार्य को महत्त्वपूर्ण रूप से प्रभावित किया है।

समाजशास्त्र और समाज कार्य-समाज शास्त्र मानव समाज का वैज्ञानिक अध्ययन है। सभी सामाजिक विज्ञानों में मानव व्यवहार का अध्ययन किया जाता है परन्तु समाजशास्त्र की विषय वस्तु अन्य विषयों से भिन्न है। इंकेलेस ने समाजशास्त्र की तीन विशिष्ट विषय सामग्री प्रस्तुत की है। पहली बात समाजशास्त्र समाज का अध्ययन है। जिसमें समाज का विश्लेषण एक इकाई के तौर पर होता है। मैक्सवैबर ने धर्म और पूँजीवाद के परस्पर सम्बन्ध का अध्ययन किया है। समाजशास्त्र में जनसंख्या की बाहरी विशेषताओं तथा उसकी प्रगति की दर का भी अध्ययन किया जाता

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

है। दूसरी बात यह है कि समाजशास्त्र राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक तथा विधिक संस्थाओं के स्तरीकरण का अध्ययन भी है। दुर्खीम ने समाजशास्त्र को सामाजिक संस्थाओं का अध्ययन बताया है। तीसरी बात यह है कि समाजशास्त्र सामाजिक सम्बन्धों का भी अध्ययन करता है। सामाजिक सम्बन्धों का अर्थ व्यक्तियों के बीच अन्त: क्रियाओं से है। समाजशास्त्र की विषय सामग्री मानव व्यवहार से सम्बन्धित है। समाजशास्त्र समाज, समुदाय, परिवार, धर्म जैसी अवधारणाओं का अध्ययन करता है। इसकी पद्धतियों पर प्राकृतिक विज्ञानों का भी महत्त्वपूर्ण प्रभाव है। समाजशास्त्र ने उस यूरोपीय समाज का भी अध्ययन किया जिसका ध्रुवीकरण तथा विभाजन वैचारिकता के स्तर पर हुआ था। वास्तव में सामाजिक सुधार तथा सामाजिक समस्याओं का अध्ययन समाजशास्त्र के प्रमुख लक्ष्य थे। यूरोपीय समाज में व्यावसायिक समाज कार्य तथा समाजशास्त्र का उदभव 19वीं शताब्दी में हुआ। दोनों ने ही जनसमर्थन पाने के लिए वैज्ञानिक पद्धतियों का प्रयोग किया। चैरिटी ऑर्गेनाइजेशन सोसाइटी तथा सेटलमेंट हाउस ने भी समाज कार्य को प्रभावित किया। चैरिटी ऑर्गेनाइजेशन सोसायटी सामाजिक समस्या के समाधान के लिए केसवर्क पर निर्भर करती थी, जबकि सेटलमेंट हाउस समस्या के समाधान के लिए ढाँचागत बदलावों की पक्षधर थी, लेकिन समाजशास्त्र तथा समाज कार्य एक दूसरे से भिन्नता भी रखते हैं। समाजशास्त्र में समाज के प्रति सैद्धान्तिक दृष्टिकोण होता है, दूसरी और समाज कार्य में समस्याओं से निपटा जाता है। समाजशास्त्रीय सिद्धान्त का आधार यथार्थ से प्राप्त तथ्य होते हैं। अक्सर ये सिद्धान्त कार्यकर्त्ता के लिए कोई महत्त्व नहीं रखते। दूसरी और समाजशास्त्रियों को समाज कार्यकर्ता का कार्य खण्डित तथा समस्या की ओर उन्मुख लगता है। समाजशास्त्र एक मूल्य मुक्त विषय है, जबकि समाज कार्य एक मूल्य आधारित व्यवसाय है। समाज कार्य पर समाजशास्त्र का प्रभाव बहुत गहरा है। समाजशास्त्रीय विश्लेषण से वे सैद्धान्तिक परिप्रेक्ष्य सामने आते हैं, जो कार्यकर्ता के कार्य को विश्लेषण की परिधि में ले आते हैं। समाजशास्त्र का योगदान निम्नलिखित क्षेत्रों में महत्त्वपूर्ण हैं–

(1) समाजशास्त्र में प्रणाली सिद्धान्तों का उपयोग पारिस्थितिकीय नमूने में किया जाता है।

(2) ढाँचा गत प्रकार्यवादी, मार्क्सवादी तथा अन्योन्य क्रियावादी जैसे समाज के तीन प्रमुख दृष्टिकोणों ने समाज कार्य पर भी प्रभाव डाला है। मार्क्सवादी सिद्धान्त ने समाज कार्यकर्त्ता को यह समझने में सहायता की है कि संघर्ष तो समाज का हिस्सा है। इन परिप्रेक्ष्यों ने सामाजिक कार्यकर्त्ताओं को सामाजिक नीति को प्रभावित करने योग्य बनाया है। अन्योन्यक्रियावादी विचारधारा ने उपसंस्कृतियों तथा अपराध को समझने में सहायता की है। समाज कार्य में निम्न सिद्धान्तकारों तथा उनकी अवधारणाओं का उपयोग हुआ है-फूको की सत्ता की अवधारणा, मार्क्स का वर्गीय सम्बन्ध तथा गॉफमैन की संवत संस्थाएँ।

(3) शक्ति, अधिकार, भूमिका, जिम्मेदारी, समूह तथा समुदाय जैसी समाजशास्त्रीय अवधारणाओं का प्रयोग केस वर्क में होता है।

(4) परिवार, तथा उनकी समस्याओं के समाधान करने के साधन के रूप में समाजशास्त्र बहुत महत्त्वपूर्ण सिद्ध हुआ है।

(5) बड़े-बूढ़ों की समस्याओं के समाधान में।

मनोविज्ञान और समाज कार्य-मनोविज्ञान मानसिक प्रक्रियाओं तथा मानव व्यवहार का अध्ययन है। मनोविज्ञान को मानव आचरण के विज्ञान के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। इसमें पर्यवेक्षण, माप और वर्गीकरण के उपकरणों का भी प्रयोग होता है। मनोविज्ञान के क्षेत्र में तीन दृष्टिकोण महत्त्वपूर्ण हैं–

(1) फ्रॉयडी और गैर-फ्रॉयडी दृष्टिकोण। इसमें मन के अवचेतन भाग को महत्त्व दिया जाता है। इसके प्रवर्तक सिंगमंड फ्रॉयड है। कार्ल जुंग ने भी इस दृष्टिकोण को एक दिशा दी है।

(2) आचरण गत दृष्टिकोण, इसके प्रवर्तक स्किनर मानव व्यवहार के अध्ययन के लिए आनुभाविक पद्धतियों की सिफारिश करते हैं।

(3) जेस्टाल्ट का दृष्टिकोण जिसमें साफल्यवादी दृष्टिकोण को लेकर चला जाता है।

मनोविज्ञान को कई भागों में विभाजित किया जाता है-नैदानिक, असामान्य, औद्योगिक, परामर्श, विकासात्मक तथा खेल मनोविज्ञान। अधिकतर मनोविज्ञान की प्रकृति वर्णनात्मक और विश्लेषणात्मक होती है। मनोविज्ञान एक व्यवसाय भी है। नैदानिक मनोविज्ञान मानसिक बीमारियों का निदान करता है। बाल विकास क्षेत्र समाज कार्यकर्त्ता तथा नैदानिक मनोवैज्ञानिक का साझा क्षेत्र है। समाज कार्य पर मनोविज्ञान का भी प्रभाव पड़ा है। फ्रॉयड के मनोविश्लेषण के दृष्टिकोण ने केस अध्ययन को काफी गति दी, जिसके कारण इस प्रकार हैं–

(1) केस अध्ययन अपने प्रारंभिक दौर में एक अत्यंत सामान्य पद्धति थी। मनोविश्लेषणात्मक दृष्टिकोण ने इसे एक स्थापित आधार प्रदान किया।

(2) परिघटना की व्याख्या के लिए ज्ञान की जरूरत।

(3) मनोविश्लेषणात्मक विचारों की सामान्य संस्कृति में प्रवेश और

(4) राजनीतिक और आर्थिक सन्दर्भ।

समाज कार्यकर्त्ताओं ने समाज कार्य को मध्यम तथा धनी वर्गों तक पहुँचा दिया। समाज कार्य को केवल निर्धनों की देखभाल करने वाला नहीं बल्कि एक सहायता करने वाला व्यवसाय समझा जाने लगा। मनोविज्ञान ने समाज कार्य के व्यवसाय को अनेक तकनीकें दीं–

(1) व्यवहार संशोधन सिद्धान्त, मनोविश्लेषणात्मक तकनीकें,

(2) बाल विकास कार्य,

(3) असामान्य मनोविज्ञान तथा

(4) परामर्श मनोविज्ञान।

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

समाज कार्यकर्त्ता इन तकनीकों का प्रयोग अपनी प्रभावशीलता बढ़ाने के लिए करते थे, परन्तु बहुत से विद्धानों ने मनोविज्ञान के साथ समाज कार्य के सम्बन्धों की आलोचना भी की है। उनके अनुसार मनोविज्ञान की पद्धतियाँ अपनाकर समाज कार्य अपने लक्ष्य से भटक गया है।

चिकित्सा क्षेत्र और समाज कार्य–स्वास्थ्य के क्षेत्र में भी समाज कार्य महत्त्वपूर्ण था, इसलिए विभिन्न रोगों के उपचार एवं कारणों का ज्ञान समाज कार्यकर्त्ता के लिए आवश्यक है। समाज कार्यकर्त्ता को इन बीमारियों के सामाजिक निहितार्थ का ज्ञान होना चाहिए।

मनोचिकित्सा और समाज कार्य–मनोचिकित्सा मनोवैज्ञानिक व्याधियों का उपचार है। मनोचिकित्सक प्रशिक्षण प्राप्त समाज कार्यकर्त्ता होते हैं, जिनमें मनोवैज्ञानिक व्याधियों के लिए जिम्मेदार कारकों का आकलन करने का कौशल होता है। समाज कार्य और मनोविज्ञान में महत्त्वपूर्ण सम्बन्ध हैं। समाज कार्य ने मनोविज्ञान से काफी सूचनायें प्राप्त की हैं। मनोचिकित्सक चिकित्सकीय नमूने पर निर्भर करते हैं। जिसमें मानसिक रोग की व्याख्या का प्रयास किया जाता है। इसी आधार पर मनोचिकित्सक रोग के विभिन्न पक्षों को देखते हैं तथा इसी आधार पर उपचार के लिए औषधि देते हैं। चिकित्सक समुदाय आमतौर पर चिकित्सकीय नमूने का ही प्रयोग करते हैं। समाज कार्यकर्त्ता रोग के सामाजिक पक्षों पर काम करते हैं। वे रोगी को मदद पहुँचाने के लिए समुदाय के अन्दर ही संसाधन जुटाते हैं। इसमें रोजगार की व्यवस्था करना तथा जीवन यापन के लिए धन की व्यवस्था करना शामिल है। समाज कार्यकर्त्ता रोगी को एक पूर्ण व्यक्ति समझता है। रोगियों के सफल उपचार के लिए समाज कार्यकर्त्ता और चिकित्सक के बीच सहयोग की आवश्यकता होती है। अमेरिका में मानसिक रोगियों का उपचार और पुनर्वास का कार्य अमेरिकन साइकिऐट्रिक एसोसिएशन करती है, जबकि भारत में इस प्रकार की कोई संस्था नहीं है।

इतिहास और समाज कार्य–इतिहास बीती घटनाओं से सम्बन्धित होता है। इतिहास कई क्षेत्रों में विभाजित है। इतिहास के द्वारा अतीत को जाना जा सकता है। इतिहास का विषय बीती घटनाएँ होती हैं उन्हें प्रभावित करने वाले कुछ कारक तथा परिस्थितियाँ होती हैं। समाज कार्य के लिए इतिहास का महत्त्व कई कारणों से हैं-समाज कार्य के इतिहास की जानकारी के लिए, समाज कार्य में उपस्थित समस्याओं की जानकारी के लिए, जैसे:-समाज कार्य के इतिहास का स्त्रीवादी दृष्टिकोण। समाज कार्य की भूमिका कल्याणकारी राज्य से जुड़ी है। वर्तमान में कल्याणकारी राज्य उदारवाद के उदय के कारण संकटों का सामना कर रहा है। समाज कार्य ने कल्याणकारी राज्य के विकास और वर्तमान समस्याओं की व्याख्या करने के लिए इतिहास का उपयोग किया है।

लोक प्रशासन और समाज कार्य–लोक प्रशासन का सम्बन्ध शासन से होता है। लोक प्रशासन एक ऐसा विषय है जिसमें प्रशासन के कई हिस्सों का अध्ययन किया जाता है। प्रशासनिक सिद्धान्त, वित्तीय प्रशासन, कल्याण प्रशासन, प्रशासनिक कानून और कार्मिक प्रशासन लोक प्रशासन की शाखाएँ हैं। समाज कार्य का सम्बन्ध कल्याण प्रशासन से है। अमेरिकन कौंसिल ऑफ सोशल वर्क एजुकेशन के अनुसार प्रशासन संसाधनों को सामुदायिक सेवा के कार्यक्रम में रूपांतरित करने की प्रक्रिया है। इसमें अध्ययन, निदान, उपचार तथा समस्या-निवारक प्रक्रिया शामिल होती है। समाज कल्याण प्रशासन का विषय-क्षेत्र निम्नलिखित हैं– सामाजिक समस्या का विश्लेषण, समस्या पर प्रशासनिक प्रतिक्रिया का निर्धारण, सामाजिक सेवाओं का आयोजन तथा कार्यान्वयन, सामाजिक सुरक्षा के कार्यक्रमों का आयोजन, सामाजिक कल्याण की एजेंसियों का प्रशासन और सामाजिक नीतियों का निर्माण।

समाज कल्याण प्रशासन विषय में सांगठनिक तथा प्रशासनिक ढाँचे का अध्ययन शामिल होता है। विभिन्न स्तरों पर समाज कल्याण प्रशासन की भूमिका महत्त्वपूर्ण होती है। इंग्लैण्ड तथा अमेरिका जैसे देशों में सरकार की कल्याणकारी सेवाओं की व्यवस्था में समाज कार्यकर्त्ता की भूमिका महत्त्वपूर्ण होती है। समाज कार्यकर्त्ता को सरकार द्वारा उपलब्ध कराई गई विभिन्न सेवाओं की जानकारी रखनी होती है। वह ही सुपात्र का चयन करता है। सुधारात्मक सेवाओं में समाज कार्यकर्त्ता ही परिवीक्षण अधिकारी होता है। इसके अतिरिक्त समाज कार्यकर्त्ता को राजनीतिक तथा प्रशासनिक सन्दर्भ की भी जानकारी रखनी होती है। उसे कानूनों, नियमों तथा विनियमों की भी जानकारी रखनी होती है। सामाजिक सेवाओं को मानवीय रूप देना समाज कार्य का प्रमुख लक्ष्य है। नीति निर्माण में भी समाज कार्यकर्त्ताओं की भूमिका महत्त्वपूर्ण हो गई है। समाज कार्यकर्त्ता अब इस बात को समझ रहे हैं कि नीतियों के निर्माण में भागीदारी करना बदलाव का एक महत्त्वपूर्ण साधन है। नीति विज्ञान में इस बात का अध्ययन किया जाता है कि नीतियाँ किस प्रकार बनाई जाती हैं तथा उन्हें किस प्रकार विश्लेषित किया जाता है। इन दोनों बातों का ज्ञान एक समाज कार्यकर्त्ता के लिए महत्त्वपूर्ण है।

समाज कार्य और कानून–समाज कार्य और कानून के मध्य महत्त्वपूर्ण सम्बन्ध हैं। अनेक देशों में समाज कार्य को वैधानिक शक्तियाँ दी गई हैं। जिससे वह पारिवारिक मामलों में हस्तक्षेप कर सकता है। सामाजिक सेवाओं में घोटालों को रोकने के लिए कानून के माध्यम से अनेक प्रावधान लागू किए गये हैं। कानून की सीमाओं के कारण आम आदमी के लिए न्याय पाना मुश्किल हो गया है, जिसे सामाजिक कार्यकर्ताओं ने समझा है। इस कारण समाज कार्य तथा कानून का सम्बन्ध महत्त्वपूर्ण हो गया है। मानवाधिकार से सम्बन्धित विषयों के विकास ने समाज कार्य में कानून की उपयोगिता को बढ़ा दिया है। भारतीय सामाजिक कार्यकर्त्ता के लिए कानून की जानकारी रखना महत्त्वपूर्ण है। भारत के सामाजिक विधान इस प्रकार बनाये जाते हैं कि व्यवहार की विषमताओं को दूर किया जा सके। इससे एक नया कानूनी ढाँचा

www.neerajbooks.com